International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-08-2025, Accepted: 30-08-2025, Published: 17-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 84-85

कन्नड़ साहित्य में बसवन्ना का योगदान

डॉ. बालकृष्ण सी
सहायक प्राध्यापक, कला एवं मानविकी विभाग, क्राइस्ट अकादमी इंस्टिट्यूट फ़ॉर एडवांस्ड स्टडीज़, बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत

सारांश
बसवन्ना (1131–1196 ई.) कन्नड़ साहित्य और भारतीय समाज–सुधार परंपरा के इतिहास में अद्वितीय स्थान रखते हैं। उनका योगदान केवल काव्य तक सीमित नहीं था, बल्कि दार्शनिक, सामाजिक और धार्मिक स्तर पर भी था। वचन साहित्य के माध्यम से उन्होंने कन्नड़ भाषा को संस्कृतनिष्ठ अभिजात साहित्य से मुक्त कर आमजन की भाषा में साहित्य रचा। उनका सिद्धांत "कायकवे कैलास" (श्रम ही कैलास है) श्रम की गरिमा और समानता की ओर संकेत करता है। अनुभव मंडप की स्थापना को विश्व का पहला लोकतांत्रिक "लोक–संसद" माना जाता है, जिसने विचार–विमर्श और संवाद की परंपरा को जन्म दिया। इस लेख में बसवन्ना की समाज सुधारक दृ ष्टि, वचन साहित्य की विशेषताएँ और कन्नड़ साहित्य एवं संस्कृति पर उनके दूरगामी प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः वचन साहित्य, समाज सुधारक, कायकवे कैलास, लिंगायत धर्म, अनुभव मंडप

कन्नड़ साहित्य का इतिहास केवल साहित्यिक सृजन की कथा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों का भी इतिहास है। 12वीं शताब्दी का कर्नाटक राजनीतिक अस्थिरता और जातीय विभाजनों से जूझ रहा था। ऐसे समय में बसवन्ना (1131–1196 ई.) ने एक नई चेतना का संचार किया।
वे केवल कवि नहीं, बल्कि समाज सुधारक, दार्शनिक और मानवतावादी चिंतक थे। उन्होंने लिंगायत धर्म की स्थापना की और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, ऊँच–नीच और भेदभाव का विरोध किया। उनकी दृष्टि ने साहित्य और समाज दोनों को नई दिशा दी।

समाज सुधारक दृष्टि

बसवन्ना का जीवन मिशन सामाजिक असमानताओं को समाप्त करना और मानवता पर आधारित समाज की स्थापना करना था।
उनका प्रसिद्ध सिद्धांत "कायकवे कैलास" (श्रम ही कैलास है) इस बात पर बल देता है कि हर प्रकार का श्रम पवित्र है।
उन्होंने स्त्रियों को धार्मिक और सामाजिक विमर्श का अधिकार दिलाया। अक्कमहादेवी इसका सशक्त उदाहरण हैं।
बसवन्ना ने अनुभव मंडप (महामने) की स्थापना की, जहाँ सभी वर्गों और जातियों के लोग बराबरी से अपने विचार साझा करते थे। इसे विश्व की पहली लोकतांत्रिक "लोक–संसद" भी माना जाता है।
वे कर्मकांड और अंधविश्वास के विरोधी थे। उनके लिए ईश्वर भक्ति का अर्थ थादृ समानता, नैतिकता और सत्य की साधना।

वचन साहित्य की परंपरा

बसवन्ना का सबसे बड़ा योगदान वचन साहित्य है।

- **वचन का अर्थः** 'कहा गया', अर्थात अनुभूत सत्य का कथन।
- **भाषा और शैलीः** सरल कन्नड़ भाषा, जिसमें सामान्य जन भी आसानी से आध्यात्मिक संदेश ग्रहण कर सके।
- **विषयवस्तुः** ईश्वर भक्ति, सामाजिक समानता, श्रम की गरिमा, स्त्री–स्वतंत्रता और अंधविश्वास का विरोध।

विशेषताएँ

1. प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित साहित्य।
2. धर्म को जीवन और श्रम से जोड़ा गया।
3. किसी मध्यस्थ (पुरोहित) की आवश्यकता नहीं, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं ईश्वर अनुभव कर सकता है।

बसवन्ना के वचनों के साथ–साथ अल्लमप्रभु, अक्कमहादेवी, चन्नबसवन्ना आदि कवियों ने भी वचन साहित्य को समृद्ध किया।

साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रभाव

बसवन्ना ने कन्नड़ साहित्य को नया मोड़ दिया और उसकी पहुँच जनसाधारण तक कर दी।

- उनके वचन केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं थे, बल्कि सामाजिक सुधार का घोष भी थे।
- दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को नई दिशा मिली। लिंगायत धर्म की स्थापना और प्रसार में वचन साहित्य की प्रमुख भूमिका रही।
- आधुनिक कन्नड़ साहित्य और नाट्यकला पर भी उनके विचारों की छाप है। गिरीश कर्नाड जैसे नाटककारों के कार्यों में बसवन्ना के विचारों की झलक मिलती है।
- आज भी वचन साहित्य लिंगायत समाज के धार्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है।

निष्कर्ष

बसवन्ना का योगदान केवल साहित्य तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने साहित्य को सरल जनभाषा में आमजन का दर्पण बनाया। समानता, श्रम और भक्ति पर आधारित उनकी शिक्षाएँ आज भी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और स्त्री–स्वतंत्रता के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक हैं।
अतः उन्हें केवल वचन साहित्य का प्रवर्तक ही नहीं, बल्कि कन्नड़ साहित्य और समाज सुधार का महानायक कहना अधिक उपयुक्त होगा।

संदर्भ

1. डॉ. एम. एम. कलबुर्गी, वचन साहित्य का अध्ययन, बेंगलुरु विश्वविद्यालय।
2. आर. सी. हिरेमठ, Basaveshwara and His Times, धारवाड़: कर्नाटक विश्वविद्यालय, 1967।

3. के. ईश्वरन, Religion and Society among the Lingayats of South India, विकास पब्लिशिंग, 1983।
4. ए. के. रामानुजन, Speaking of Śiva, पेंगुइन क्लासिक्स, 1973।
5. कर्नाटक राज्य गजेटियर, कर्नाटक सरकार प्रकाशन।
6. डॉ. एम. चिदानंद मुrthy, Sharana Sahitya, मैसूर विश्वविद्यालय।
7. बसवराज नाइक, वचन साहित्य: एक आलोचनात्मक अध्ययन, अटलांटिक पब्लिशर्स, 2003।
8. एम. शिवकुमार, बसव दर्शन और आधुनिक सामाजिक चिंतन, बेंगलुरु विश्वविद्यालय, 2015।